ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /76

अयोध्या अतीत से वर्तमान तकः एक ऐतिहासिक अनुशीलन

*सन्तोष कुमार झा एवं **प्रो0 एन0के0 तिवारी
*शोध छात्र एवं ** शोध पर्यवेक्षक
आचार्य, इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग
डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

शोध–सार

अयोध्या का इतिहास अपनी प्राचीनता के साथ–साथ रामजन्मभूमि एवं बाबरी मस्जिद विवाद के कारण निरन्तर वैश्विक धरातल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करता रहा है। अयोध्या की पहचान भारत ही नहीं बल्कि एशिया के देशों में भी बनी रही है। सरयू नदी के तट पर बसे अयोध्या (फैजाबाद) की महत्ता सर्वविदित है। जिसे कोशल के नाम से भी जाना जाता है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से ओत–प्रोत भगवान श्रीराम की जन्म स्थली हजारों हिन्दू देवालयों, बौद्ध, जैन एवं मुस्लिम धर्म को समेटे हुए सहज रूप में अयोध्या के महत्व का अनुभव किया जा सकता है। अयोध्या को विभिन्न धर्मों एवं संस्कृतियों का केन्द्र भी कहा जा सकता है।

शोध पत्र–

अयोध्या ई0पू0 200 के आस–पास इतिहास की पौराणिक ग्रन्थों से पुष्टि होती है। अयोध्या को 'अज्ञेय' अर्थात् 'जहाँ युद्ध न हुआ हो' भी कहा जाता है। प्राचीन अयोध्या अविजित, शक्ति सम्पन्न कीर्ति और वैभव युक्त अयोध्या को 'अवध' भी कहा जाता है जो बारह योजन अर्थात 84 कोस दूर तक विस्तृत था। राजा मनु द्वारा स्थापित अयोध्या कोशल की राजधानी थी। द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में कोशल साम्राज्य का विलय मुगल साम्राज्य में हो गया था। इसी समय से कोशल शुंग, कुषाण, गुप्त, हर्ष, गहड़वाल शासकों के एक राज्य के रूप में अस्तित्व में रहा।

जैन एवं बौद्ध साहित्यों में कोशल एवं अयोध्या के लिए कोशल, विनीता, रामपुरी, पिशोकिया, अयूटो, अज्जोझा आदि संज्ञाओं का प्रयोग किया गया है। कभी कोशल की राजधानी अयोध्या रही है तो कभी साकेत तथा श्रावस्ती। बारहवीं शताब्दी में मुस्लिम सत्ता की स्थापना के साथ ही इस भू–भाग का नाम कोशल से बदलकर अवध कर दिया गया। सल्तनत काल एवं मुगलकाल में अवध सूबे के अन्तर्गत लखनऊ का भाग भी समायोजित था। नवाबी युग में एक बार पुनः कोशल या अवध की राजधानी का गौरव फैजाबाद/अयोध्या को प्राप्त हुआ। अवध का शासक लखनऊ समेत इस भू–भाग पर भी शासन करता था।

अयोध्या वर्तमान उत्तर प्रदेश के फैजाबाद एवं आस–पास के भू–भाग पर अवस्थित है। छठीं शताब्दी ई0पूर्व में इसके पश्चिम तथा उत्तर–पश्चिम में पांचाल जनपद था। उत्तर की ओर हिमालय की पहाड़ियां इसकी सीमा निर्धारित करती थी। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार कोशल की पूर्वी सीमा सदानीरा नदी (वर्तमान गण्डक) तक तथा दखिण की ओर स्यंदिका (वर्तमा सई नदी) तक थी। इसके पालि ग्रंथों में सदानीरा को सुन्दरिका नाम से उल्लिखित किया गया है। बी0सी0 लाहा के अनुसार राम की मृत्यु के बाद ही कोशल का विभाजन हो गया था। ज्येष्ठ पकुत्र कुश दक्षिण कोशल का राजा बना तथा लव उत्तर कोशल का। परन्तु डॉ0 विशुद्धानन्द पाठक इस मत से सहमत नहीं है।[1] डॉ0 पाठक के अनुसार राम ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य का विभाजन कर दिया था। परन्तु वे स्वतंत्र राज्य न होकर

अयोध्या या कोशल के अधीनस्थ राज्य थे। फिर कोशल साम्राज्य राम के समय में इससे बहुत अधिक विस्तृत था। बौद्ध ग्रन्थों में कोशल नाम की महत्ता बतलायी गयी है। सुमंगल विनाशिनी टीका के अनुसार इस भू भाग पर कोशल देशीय राजकुमार निवास करते थे। इसलिए इस भू भाग का नाम कोशल पड़ा।[2] बुद्धघोष ने इस संदर्भ में एक अन्य तथ्य प्रस्तुत किया है।

महापनाद नाम कोशल राजकुमार कभी हँसता नहीं था, राजा ने इसे हँसाने के लिए अथक प्रयास किया किन्तु असफल रहा। अतः इन्द्र के प्रयास से जब राजकुमार हँसा तब उसकी हँसी देखने के लिए राज्य के लोग एकत्रित हुए। इसके पश्चात जब वह वापस लौट रहे थे तक कुछ लोगों ने उनके प्रशन किया कि ''कच्चि भो कुशलम्? अर्थात सब कुशल तो है। इस प्रकाश कोशल नाम अस्तित्व में आया।

कोशल अर्थात अयोध्या का वैभव और ऐश्वर्य त्रेता द्वापर के अतिरिक्त युगों तक अपने महत्व और अस्तित्व दोनों को ही सहेज कर रखा है। अयोध्या का उल्लेख महाकाव्यों में भी विस्तार से प्राप्त होता है। रामायण के अनुसार अयोध्या सरयू नदी के तट पर एक बेहद खूबसूरत जुड़वा शहर के रूप में धार्मिक आस्था के केन्द्र के रूप में बस हुआ है। जिसे कोशल राज्य के सर्वप्रमुख नगर के रूप में स्थान प्राप्त है।[3] वाल्मीकि रामायण के अनुसार[4] इस नगर को मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु के लिए बसाया था और कौशल की राजधानी[5] बनाकर इक्ष्वाकु को उसका राजा बनाया। इक्ष्वाकु, मनु वैवस्वत के नवें पुत्र थे, जिन्होंने अयोध्या में शासन किया।[6] अयोध्या के सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु ऐक्ष्वाकु और ऐक्ष्वाक उपाधियों से जाने जाते थे। इन्हें इक्ष्वाकु इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये मनु के वंशज हैं।[7] पुराणों में इन राजाओं की वंशावलियाँ मिलती हैं।[8] तदन्तर वही अयोध्या राज्य का क्षेत्र कोशल के नाम से अभिहीत हुआ और मध्य युग में लोक प्रचलन का सम्बल पाकर ''कोशल'' कहा जाने लगा।[9]

बौद्ध, जैन ग्रन्थों और मध्यकालीन संस्कृत बाड़ग्मय में अयोध्या के लिए 'साकेत' शब्द का प्रयोग हुआ।[10] महाकवि कालीदास ने रघुवंश के दसवें सर्ग में राजधानी को अयोध्या[11] तथा सर्ग सोलह में साकेत[12] लिखा है। यह कौन कह सकता है कि रामचन्द्र जी के विवाह के समय तथा वनवास से लौटते समय का नगर भिन्न था। वस्तुतः अयोध्या को ही साकेत कहा गया है।

अतः प्राचीन 'कोशल' का इतिहास वस्तुतः अयोध्या, साकेत तथा मूलरूप से कौशल का इतिहास है। पौराणिक जन–श्रुति के अनुसार आज से लगभग छः हजार वर्ष पूर्व उत्तर भारत के मध्य (मध्य प्रदेश) में मनु और उनके वंशजों का उदय हुआ। मनु इस देश के प्रथम राजा थे, [13] जिन्होंने राज्य संस्था स्थापित की तथा राज्य के नियम बनाये। मनु के नाभागारिष्ट, नाभाग, कारूष, घृष्ट, नारिष्यन्त, पृषधन, श्य्यति, वेण तथा इक्ष्वाकु नाम नौ पुत्र हुए और इला नाम की एक कन्या हुई। पुत्रों से सूर्यवंश तथा पुत्री से चन्द्रवंश का इतिहास चला। इसके अतिरिक्त मनु के पचास पुत्र और भी जो आपस में ही लड़कर मृत्यु को प्राप्त कर चुके।[14]

उत्तर वैदिक काल तक कोशल का उल्लेख प्रमुख राज्यों में अवश्य हुआ है, परन्तु इसका विशेष इतिहास नहीं मिलता। शाक्य–सिंह बुद्ध देव के जन्म से कोशल राज्य का स्पष्ट इतिहास पुनः उपलब्ध होता है।[15] 'मज्झिम निकाय' में गौतम को 'कोशलक' अर्थात कोशल का रहने वाला (भगवापि कोशलको) कहा गया है।[16]

बुद्ध के समय भारत के राजनीतिक जीवन का प्रमुख केन्द्र उत्तर भारत ही रहा। उत्तर भारत में उस समय चौदह राज्यों का उल्लेख मिलता है। जिसमे से दस तो गणराज्य थे तथा शेष चार मगध, कोशल, वत्स तथा अवन्ती प्रसिद्ध राजतंत्र थे।[17]

कोशल उत्तर पूर्व भारत का प्रमुख राज्य था, जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी।[18] महात्मा बुद्ध के पूर्व ही कंस नामक राजा ने काशी राज्य को जीता था। जातक ग्रंन्थों में कंस को 'बरानानसिग्गहो' अर्थात बनारस पर अधिकार करने वाला कहा गया है। कंस का पुत्र तथा उत्तराधिकारी महाकोशल हुआ। उसके समय कोशल का काशी पर अधिकार हो गया। पूर्व में उसका प्रतिद्वन्दी राज्य मगध था। कोसल तथा मगध के बीच वैमनस्य का मुख्य कारण काशी का राज्य था। जिसकी सीमायें दोनों ही राज्यों को स्पर्श करती थी। बुद्ध के समय कोशल का राजा प्रसेनजीत था।

अयोध्या के प्राचीन वैभव को वाल्मीकि रामायण में बड़े ही दर्शनीय रूप में व्याख्या की गयी है। सरयू नदी के किनारे, धन–धान्य से भरपूर उत्तरोत्तर प्रगति करने वाला कोशल नाम बड़ा प्रदेश है। उस प्रदेश के सुप्रसिद्ध महाराज मनु द्वारा बसाई गयी नगरी का नाम ही अयोध्या है। बड़ी–बड़ी सड़कें, चारो ओर के बड़े–बड़े दरवाजे उसकी भीतर की सड़के सुन्दर–सुन्दर फुलवारियों से सुशोभित है। देश को वृहद रूप देने वाले महाराज दशरथ ने उस नगरी को इन्द्र की अमरावती पुरी की संज्ञा दी थी। महाकवि कालीदास ने लिखा है कि ''अयोध्या पुरी क्षत्रियों के तेज की सभी धन–धान्य से पूर्ण दिव्य नगरी ऐसे प्रतीत होती है जैसे भोग के भार से वह स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आयी हो।''

आधुनिक अवध प्रान्त को वाल्मीकि रामायण में कोसल जनपद को विस्तृत महान और समृद्धशाली कहा गया है। अयोध्या की स्थिति को सरयू नदी के किनारे निर्दिष्ट किया गया है।[19] इसकी राजधानी मनु के द्वारा बसाई गयी अयोध्या नगरी थी।[20] अयोध्या अपनी प्राचीनता के कारण प्रसिद्ध हे। इसका वर्णन अथर्व संहिता में भी विस्तृत रूप से किया गया है। इस संहिता में इस पुर का कई मन्त्रों में महत्व दर्शाया गया है।[21] शिव संहिता में अयोध्या का अनेक नामो यथा– नन्दिनी, सत्या, साकेत, कौसला, राजधानी, ब्रह्मपुरी और अपराजिता से युक्त अष्टदल पदम् के आकार की नवद्वारों से युक्त और धर्म के धनी लोगों की नगरी कही गई है।[22] इस संहिता में यह लीला भूमि के रूप में भी उल्लेख किया गया है।

इसी प्रकार वशिष्ठ संहिता[23] और वृहद ब्रह्म संहिता[24] आदि में अयोध्या के महत्व को दर्शाया गया है। वाल्मीकि ने इसकी स्थिति, स्थायित्व, समृद्धि और शोभा का वर्णन रामायण में वृहद एवं विशद रूप में दिखाई पड़ता है।[25] कौसल जनपद में स्थित अयोध्या पुरी का वर्णन कवि ने विस्तार से किया है। इसके अतिरिक्त इसी जनपद में स्थित नन्दिग्राम का भी उल्लेख किया गया है। यह अयोध्या से एक कोस की दूरी पर स्थित एक रमणीय ग्राम था।[26] भरत ने राम के वनवास जाने पर नन्दिग्राम (भरत कुण्ड) से शासन का संचालन किया था।[27] वाल्मीकि रामायण में कोसल जनपद के ग्राम नगर की समृद्धि का भी वर्णन किया गया है।[28]

चीनी यात्री फाह्यान ने साकेत का चीनी अनुवाद शाची किया है। फाह्यान का कथन है कि ''यहाँ से चलकर तीन योजन दक्षिण पूर्व का विशाल राज्य मिला।'' उसने भी अयोध्या अथवा शाची को बौद्धों का तीर्थ कहा है। यहाँ जैनियों के चौबीस तीर्थंकरों में से बाईस इच्छवाकु वंशीय थे और उनमें सबसे पहले तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव जी और चार अन्य तीर्थंकरों का भी जन्म अयोध्या में ही हुआ। महायान सम्प्रदान के गुरू वसुवंधु पुस अयोध्या में ही निवास करता था। भगवान तथागत ने यहाँ अंजनबाग में बौद्धमत के कुछ सूत्रों का उपदेश दिया था।

बौद्ध ग्रन्थों में अयोध्या को साकेत और विशाखा कहा गया है। दिव्यावदान में साकेत की व्याख्या इस प्रकार है ''स्वयंमागतं स्वयमागत साकेत साकेत मिति संज्ञा संवृता, ''अर्थात यह आप ही आया, आप ही आया, इसलिए साकेत नाम पड़ गया।[29] बाबर द्वारा विक्रमादित्य द्वारा बनवाया गया राम

जन्मभूमि मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद बनाई गयी तब से अयोध्या अशान्त बनी रही। 400 वर्षों इके संघर्ष के पश्चात् हिन्दू–मुस्लिम पक्षकारों द्वारा सुप्रीम कोर्ट के आदेश को हिन्दुओं के पक्ष में मानते हुए संघर्ष और कटुता को विराम लगा दिया।

संदर्भ–सूची

1. डॉ0 विशुद्धानन्द पाठक, हिस्ट्री आफ कोशल, पृ. 46
2. सुमंगल विशाशिनी की टीका, कोशलानाम जनपदीनों राजकुमारा, तेषाम का निवासो एकोवपि रूल्ही सादेन कोशलाति उच्चति।
3. कोसलनों नाम मुद्रितः स्फीतो जनपदो महान।निविष्टः सरयूतीरे प्रभूत धनधान्यवान।। रामायण, बालकाण्ड, संर्ग 5, पंक्ति 5
4. अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोक विश्रुता।मनुना मान्वेन्द्रेण सापुरी निर्मिता स्वयम्।।वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, अध्याय–5 श्लोक 6
5. एस0सी0डे0 हिस्टारिसिटी ऑफ रामायण एण्ड दी इण्डो आर्यन सोसायटी इन इण्डिया एण्ड सीलोन, अजन्ता पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1976, पृ0 80–21
6. वायु पुराण 85/3–4
7. विष्णु पुराण, विल्सन संस्करण, भाग–3 पृ 259
8. पार्जिटर एफ0ई0 ऐश्येण्ट इण्डियन हिस्टारिकल ट्रेडिशन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली,1962, पृ. 90
9. अग्रवाल सरयू प्रसाद, कोशल के स्थान नामों का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, पृ. 1
10. विविधतीर्थकल्प, पृ. 24
11. पुरमविशदयोध्यां मैथिली दर्शिनीनाम। रघुवंश, सर्ग, 10, श्लोक 96
12. साकेतनायो ज्जलिभि प्रणेयुः। रघुवंश सर्ग 16, श्लोक 13
13. वैवस्वतो मनुनामि माननीयो मनीषिणाम।असीन्मही भूतामाद्यः प्रणवश्छन्दसामिव।। रघुवंश संर्ग 1
14. लाला, सीताराम, अयोध्या का इतिहास, प्रथम संस्करण, पृ 79
15. लाला, सीताराम, अयोध्या का इतिहास, प्रथम संस्करण, पृ 39
16. तिवारी उदय नरायण, प्राचीन भारत के नगर तथा नगर जीवन, पृ. 108–109
17. पाण्डेय, राजबली, उपरोक्त पृ. 96
18. नन्दूलाल डे, दि ज्योग्राफिकल डिक्शनरी ऑफ ऐश्येन्ट एण्ड मिडिवल इण्डिया, पृ. 14
19. वाल्मीकि रामायण, 1/5/5
20. वही, 1/5/6
21. अथर्व संहिता, 10/2/27 से 33 मंत्र
22. शिव संहिता, पटल, 5 अध्याय 20
23. वशिष्ट संहिता, 26
24. वृहद ब्रह्म संहिता– पाद–3 अध्याय–1
25. वाल्मीकि रामायण 1/5
26. वही, 6/128/27, 28, 29
27. वही, 2/115/22
28. वही, 2/50/8, 9, 10
29. नागर, अमृतलाल, गदर के फूल, सूचना विभाग, लखनऊ, उ0प्र0 पृ. 56